॥ मेरी लगी गुरु संग प्रित ॥

मुझे मिल गया मन का मित दुनिया क्या जाने ॥
मेरी लगी गुरु संग प्रित । दुनिया क्या जाने ॥
क्या जाने भाई क्या जाने । (२)
मुझे मिल गया मन का मित दुनिया क्या जाने ॥

बाजी जब गुरुवर पे लगाई । पलट गया पासा मेरे भाई ॥
मेरी हार हो गई जीत । दुनिया क्या जाने ॥
मुझे मिल गया मन का ... । क्या जाने भाई ....(२) ... मेरी लगी गुरु संग ...

प्रितम ने खुद प्रेम जताया । करके इशारा पास बुलाया ॥
है प्रेम की उलटी रीत । दुनिया क्या जाने ॥
मुझे मिल गया मन का ... । क्या जाने भाई ....(२) ... मेरी लगी गुरु संग ...

ताल अलग है राग अलग है । ये वैराग अनुराग अलग ॥
मन गाये किसके गीत । दुनिया क्या जाने ॥
मुझे मिल गया मन का ... । क्या जाने भाई ....(२) ... मेरी लगी गुरु संग ...

सत्संगी हो कर जो सिखा । काम क्रोध खोकर जो सीखा ॥
केसा है ये संगीत । दुनिया क्या जाने ॥

मुझे मिल गया मन का मित दुनिया क्या जाने ॥
मेरी लगी गुरु संग प्रित । दुनिया क्या जाने ॥
क्या जाने भाई क्या जाने । (२)
मुझे मिल गया मन का मित दुनिया क्या जाने ॥

Send corrections to hariomgroup@gmail.com